

नारायण गुरु

जन्म- 28 अगस्त, 1855; मृत्यु- 20 सितम्बर, 1928) भारत के महान संत एवं समाज सुधारक थे। कान्कुमारी में मातृत्वन पढ़ाड़ों की एक गुफा में उन्होंने तपस्या की थी। गौतम बुद्ध को गया में पीपल के पेड़ के नीचे विधि की प्राप्ति हुई थी। नारायण गुरु को उस परम की प्राप्ति गुफा में हुई। समाज सुधारक नारायण गुरु द्वारा स्थापित शिखगणर मठ पट्टाड़ी को चाटी पर स्थित है और उनको समाधि केल में सप्तसे प्रसिद्ध स्मारकों में से एक है। नारायण गुरु को श्री नारायण गुरु के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म एजावा जाति के परिवार में हुआ था। केरल के जाति-ग्रस्त समाज में उन्हें बहुत अन्यथा का समान करना पड़ा। उन्होंने केरल में सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया, जातिवाद को खारिज कर दिया और आध्यात्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता के नए मूल्यों को बढ़ावा दिया। नारायण गुरु ने मंदिरों और शैवालिक संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से अपने स्वयं के प्रयासों से दृष्टितों के आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान की आवश्यकता पर जोर दिया।

जन्म

श्री नारायण गुरु का जन्म केरल के तिरुअनंतपुरम के उत्तर में 12 किलोमीटर दूर एक छोटे से गाँव में सन 1855 में हुआ था। स्वयं पिछड़ी जाति के होने के कारण वे इस समुदाय के दुख दद को समझते थे। इनका घर का नाम 'नानू' था। वे बचपन से ही बहुत नश्यट थे। उनके पिंडा मदन असन एक किसान थे, वे प्रसिद्ध आचार्य (गुरुकुल के) और संस्कृत के विद्वान थे, आयुर्वेद और ज्योतिष के ज्ञान भी थे। श्री नारायण गुरु की मां एक सरल माहिला थी। उन्होंने माता-पिता की चार संतानों में एकमात्र बालक थे नारायण अथवा 'नानू'।

शिक्षा

नानू एक आम बालक की तरह पले-बढ़े। 5 वर्ष की आयु में उन्हें गांव के स्कूल में प्राथमिक शिक्षा के लिए भर्ती किया गया। वहाँ उन्होंने संस्कृत भी पढ़ी।

प्राथमिक

शिक्षा के बाद नानू ने घर पर रहकर खेती और धरेलू कामकाज में हाथ बंटाया। वे प्रतिदिन संस्कृत काव्य पाठ करते थे। वे मंदिर में पूजा और एकता में ध्यान भी करते थे। 14 वर्ष की आयु में वे 'नानू भक्त' के नाम से प्रसिद्ध हो गए। 15 वर्ष की माता के देहान्त के बाद उनके मामा कृष्ण वेदवार (आयुर्वेदाचार्य) ने उनकी देखभाल की। कृष्ण वेदवार को अपने भाजे की अप्रतिम प्रतिभा का जल्दी ही पता लग गया। अतः नानू को उच्च शिक्षा के लिए करुणालिप्ती में एक सोन्य हिन्दू थे। चाहिए नानू जम्म से अड्डों थे। नानू एक प्रतिशाशाली शिक्षकों के समान संस्कृत में अपनी विद्वता सिद्ध कर दी। संस्कृत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात 1881 में नानू अत्यधिक बीमार पड़ गये और उन्हें वापस घर लौटाना पड़ा। [1]

संघर्ष का दौर

रोगमुक्त होने के बाद उन्होंने अपने पैतृक गांव में और अस-पास के क्षेत्रों में छोटे-छोटे विद्यालय खोलने का निर्णय लिया। वहाँ से उन्होंने स्थानीय समाज के बालकों के पास भेज दिया। स्पष्ट पिल्लै एक सर्वांग हिन्दू थे। चाहिए नानू जम्म से अड्डों थे। अतः उन्हें अपने पुरुष के घर उहर रहकर अध्ययन करना पड़ा। नानू एक प्रतिशाशाली शिक्षकों के स्वार्थी सिद्ध हुए और उन्होंने अपने सभी संघर्षों से आगे निकलकर शिक्षकों के समान संस्कृत में अपनी विद्वता सिद्ध कर दी। संस्कृत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात 1881 में नानू अत्यधिक बीमार पड़ गये और उन्हें वापस घर लौटाना पड़ा। [1]

मृत्यु त्वाग

घर का त्वाग करके नानू अध्यात्मिक जान की खोज में निकल गए। उन्होंने योग शिक्षा ली, मारुत्मलै की युक्ताओंमें सधाना की, कठोर अनुशासन का व्रत साधा। व्यक्तिके विकास के प्रसार और गुण-सम्पन्नता हेतु कर्म और गति का दौर शुरू हुआ। कानूनी समय बाट श्री नारायण गुरु ने तिरुअनंतपुरम से 20 किमी दूरी में अरुण्यपुरम में नेयर नदी के तट पर 1888 में शिव मंदिर की स्थापना की और इस प्राचीनता को टुकड़ा दिया कि केवल एक ब्राह्मण ही पुजारी हो सकता है। हिन्दू मंदिरों में जिनका प्रवेश वर्जित था, वे इस मंदिर में निवार्य आ सकते थे।

आश्रम स्थापना

मंदिर के ही निकट उन्होंने एक आश्रम बनाया तथा एक संगठन बनाकर मंदिर-संपदा और द्वारालूओं के कल्पनाय की व्यवस्था की। वहीं संगठन बाद में 'श्री नारायण धर्म परिपालन योग' (एस.एस.डी.पी.) के नाम से जाना गया, जो श्री नारायण धर्म प्रसार करने लागा। 1904 में नारायण गुरु ने विवाह के एक तीरीय विनाग के द्वारा निवारण करका एक शांत, सुरक्षा पर्वतीय स्थल शिवगिरि में अपनी सार्वजनिक गतिविधियों के द्वारा जन्म लिया। 1928 में अपनी महासमाधि तक श्री गुरु ने वहीं रहकर साधा की थी। शिवगिरि में नारायण गुरु ने दो मार्दों और एक मठ की स्थापना की। शिवगिरि आकर ही रोबीन्सन टैगोर और महात्मा गांधी ने श्री नारायण गुरु के दर्शन किए थे।

गुरुपुरुष कथन

गुरुपुरुष वीरेन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है- "मैंने विश्व के विभिन्न स्थानों की यात्रा की है। इन यात्रा के दौरान मुझे अनेक संतों और विद्वानों के दर्शन करने का अवसर मिला है। लेकिन मैं वही स्थान परिषद् रूप से स्वीकार करता हूँ कि मुझे अभी तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो केरल के स्वामी श्री नारायण गुरु से अध्यात्मिक रूप से अधिक महान हो अथवा आध्यात्मिक उपलब्धियों में उन के समकक्ष भी है।" गुरुदेव टैगोर और स्वामी श्री नारायण गुरु के दर्शन किए थे।

संपादकीय

भारतीय संस्कृति



काल माना जाता है। इसका मुख्य कारण यह था कि सातवीं शताब्दी और दसवीं शताब्दी के बीच नई स्वर्ण मुद्राओं की बहुत कमी हो गई। प्रथम पश्चिम तथा उत्तरी अफ्रीका में विस्तृत और शक्तिशाली अरब साम्राज्य में ऐसे कई क्षेत्र शामिल थे जिनमें बड़ी मात्रा में खाने से स्वर्ण निकाला जाता था। अरब स्वयं भी समुद्र प्रेसीज़ व्यक्ति थे। भारतीय कपड़ा, मसालों तथा लोबान के लिए अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वारा गतिरोध आया था। इसके परिणामस्वरूप इसके क्षेत्र में नगरों तथा नगरिकों की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास का विवरण किया है। दसवीं शताब्दी के बाद उत्तर भारत में विदेश व्यापार और वाणिज्य में धीरे-धीरे विवरण के लिए अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वारा गतिरोध आया था। इसके परिणामस्वरूप इसके क्षेत्र में नगरों तथा नगरिकों की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास का उदय से भी, जिससे वाक्जूद कभी साहसी देश के तकानीतीन जंगली पशुओं के अलावा एस कब्ज़े थे जो गाहरीयों को लूट लेते थे। नगरों में पुल खुले हो गए। गुजरात में चंगों द्वारा गतिरोध की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास का उदय से भी, जिससे वाक्जूद (इंग्लैंड) जैसे प्राचीन

नोएडा, (गौतमबुद्धनगर) रविवार 28 अगस्त 2022

सामाजिकों का पतन हो गया, भारत के व्यापार और विशेष कर जमीन के रस्ते होने वाले व्यापार पर बहत असर पड़ा। परिणामस्वरूप उत्तरी भारत में आठवीं और दसवीं शताब्दी के बीच नई स्वर्ण मुद्राओं की बहुत कमी हो गई। प्रथम पश्चिम तथा उत्तरी अफ्रीका में विस्तृत और शक्तिशाली अरब साम्राज्य में ऐसे कई क्षेत्र शामिल थे जिनमें बड़ी मात्रा में खाने से स्वर्ण निकाला जाता था। अरब स्वयं भी समुद्र प्रेसीज़ व्यक्ति थे। भारतीय कपड़ा, मसालों तथा लोबान के लिए अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वारा गतिरोध आया था। इसके परिणामस्वरूप इसके क्षेत्र में नगरों तथा नगरिकों की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास के अलावा एस कब्ज़े थे जो गाहरीयों को लूट लेते थे। नगरों में चंगों द्वारा गतिरोध हो गए। गुजरात में चंगों द्वारा गतिरोध की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास के अलावा एस कब्ज़े थे जो गाहरीयों को लूट लेते थे। नगरों में चंगों द्वारा गतिरोध हो गए। गुजरात में चंगों द्वारा गतिरोध की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास के अलावा एस कब्ज़े थे जो गाहरीयों को लूट लेते थे। नगरों में चंगों द्वारा गतिरोध हो गए। गुजरात में चंगों द्वारा गतिरोध की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास के अलावा एस कब्ज़े थे जो गाहरीयों को लूट लेते थे। नगरों में चंगों द्वारा गतिरोध हो गए। गुजरात में चंगों द्वारा गतिरोध की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कारण पश्चिम में रोमन विश्वास के अलावा एस कब्ज़े थे जो गाहरीयों को लूट लेते थे। नगरों में चंगों द्वारा गतिरोध हो गए। गुजरात में चंगों द्वारा गतिरोध की हास हुआ।

वाणिज्य और व्यापार में गतिरोध का मुख्य कार

पाकड़ जिले में लीज अवधि समाप्त हो चुकी पथर खदानों की मापी शुरू

दैनिक समाज जागरण संचादाता अभियंक तिवारी (पाकड़)

पाकड़ जिले में 31 मार्च 2022 तक खत्म हुए पथर खदानों की लीज अवधि



अवधि के खत्म होने पर रंची से जियोलॉजिकल की टीम पाकड़ महुचंही मिली जानकारी के अनुसार 31 मार्च 2022 को कुल 39 पथर खदान की लीज अवधि समाप्त हुई है। ऐसे में इन सभी पथर खदानों की मापी कराई जाएगी। जिससे यह पता लगाया जाएगा कि जितना पथर उत्खनन के लिए लीज प्रदान किया गया था, उससे ज्यादा पथर उत्खनन तो नहीं किया गया है। ऐसे में जियोलॉजिकल विभाग के 3-4 सदरयों की टीम स्टेलाइट पीपीएस के माध्यम से पथर खदानों की जांच कर रहे हैं। वह टीम ने मालपहाड़ी के पथर खदान क्षेत्रों से जांच शुरू की है। इस संबंध में डॉम्पोए प्रदीप कुमार ने बताया कि 31 मार्च 2022 को कुल 39 पथर खदानों की लीज अवधि समाप्त हुई है। जिसकी मापी की जा रही है।

हिरण्यपुर प्रखंड के बीड़ीओ के खिलाफ हुई पोस्टर बाजी।

दैनिक समाज जागरण रिपोर्ट अभियंक तिवारी (पाकड़)

हिरण्यपुर। पाकड़ जिला के हिरण्यपुर प्रखंड के बीड़ीओ उमेर कुमार स्वामी के खिलाफ हिरण्यपुर बाजार के कई स्थानों पर पोस्टरबाजी की गई है। वे



पोस्टरबाजी भाजा पहरणपुर इकाई की ओर से की गई है। इसकी पुष्टि मंडल अध्यक्ष कैलाश प्रसाद सिंह ने की आओ और सोनीपुर बीड़ीओ मुद्रावद, प्राप्त हिरण्यपुर बीड़ीओ होश में आओ, हिरण्यपुर बीड़ीओ की संपत्ति की जांच हो, योजनाओं में व्याप अनिवार्यता की जांच करना होगा, रात में प्रखंड कार्यालय चलाना बंद करो आदि स्लोगन लगाकर विरोध जताया गया है। अचानक हुई पोस्टर बाजी से इलाके में तह तह की चाचाओं का बाजार गर्म है। मंडल अध्यक्ष ने कहा कि आगे भी आदिवासी जारी रहेगा। इस इस मामले में बीड़ीओ उमेर कुमार स्वामी की तरफ लगाया गया आरोप बैरिनियाद है। भाजा के मंडल अध्यक्ष कैलाश प्रसाद सिंह कई मामले में अनावर कार्य को लेकर बिचार करते हैं, जो नियमसंगत नहीं होता है। ऐसी स्थिति में मांग पूरा नहीं होने पर इस तरह के बैरुनियाद आरोप लगाए जा रहे हैं।

वोटर कार्ड को आधार कार्ड से जोड़ने के लिए विशेष कैंप का आयोजन किया गया।

दैनिक समाज जागरण संचादाता बिक्री सन्याल।

लिटीपाड़ा:- प्रखंड कार्यालय परिसर में शनिवार को जिला निवाचन



पदाधिकारी-सह-उपायुक्त वरुण रंजन के निर्देश पर वोटर कार्ड को आधार कार्ड से जोड़ने के लिए विशेष कैम्प का आयोजन किया गया। इस कैम्प में प्रखंड, अंचल, बाल विकास परियोजना कार्यालय, जैएसएलपीएस, तेजस्वी के कर्मियों सहित स्थानीय मतदाताओं को उनके वोटर कार्ड को आधार कार्ड से जोड़ना गया। वोटर कार्ड को आधार कार्ड से लिंक करने के कार्यक्रम से जोड़ने का काम किया गया। नीचे दी जाने वाले जवानों की मौजूदगी में संघर्ष वाहन जांच अभियान चलाया गया। इस

पाकड़ पुलिस ने चलाया वाहन जांच अभियान

दैनिक समाज जागरण रिपोर्ट मृत्युंजय कुमार

पाकड़िया (पाकड़): पुलिस अधीक्षक पाकड़ हरदीप पी. जनादेव के निर्देशनुरा शनिवार को सुरक्षा के दृष्टिकोण से पुलिस ने वाहन जांच अभियान चलाया। थाना क्षेत्र के तलवा, जराना मोड़, पाकड़िया जारी एवं बनोग्राम मांडल के अलवा सीमावर्ती क्षेत्रों में पुलिस अधिकारी एसआई सीतोश कुमार एवं जवानों की मौजूदगी में संघर्ष वाहन जांच अभियान चलाया गया। इस



दोरान चार पहिया एवं दो पहिया वाहन सवार लोगों के वाहनों का डिक्की, सीट बेट्टा, डार्किंग लाइसेंस, धूआं लाइसेंस एवं बैग को अच्छी तरह से जांच किया गया। सिद्ध कानूनी चौक में भी आगे जाने वाले वाहनों की संघर्ष जांच की गई। इस दोरान सभी दो पहिया चार पहिया कुमार ने बताया कि बॉर्डर की तरफ आगे जाने वाले को कड़ी जांच की जा रही है। इधर जांच अभियान से चालकों के बीच हड्डकान देखा गया। लोग जांच के डर से दूसरे ग्रामीण गासों से गंभीर घायल हो गये।

आधार कार्ड को वोटर कार्ड से जोड़ने को लेकर समाहरणालय, अनुमंडल कार्यालय एवं सभी प्रखंडों में विशेष कैंप का आयोजन किया गया।

दैनिक समाज जागरण संचादाता

अभियंक तिवारी (पाकड़)

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से जोड़ने को लेकर शनिवार को समाहरणालय परियोजना के प्रवेश द्वारा के सभी परियोजनाएँ कैंप के लगाया गया। कैप में समाहरणालय कर्मियों सहित अन्य लोगों से आधार नंबर, एपिक नंबर एवं मोबाइल नंबर प्राप्त किया गया जिसके पश्चात डिटेल्स संबंधित निर्वाचन पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा। इसके बाद संबंधित निर्वाचक

निवधन पदाधिकारी फॉर्म 6 बी का

सभी प्रखंडों में भी लगाया गया

कैंप। आधार को जोड़ने को लेकर समाहरणालय के अलावे शनिवार को जिले के सभी प्रखंडों, अनुमंडल कार्यालय में भी शिरक लगाकर लोगों से सभी डिटेल्स संकलन किये गये। सभी शिरकों में पर्याप्त मात्रा में कर्मियों की नियुक्ति की गई थी।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया जायेगा।

पाकड़ जिला में आधार कार्ड को वोटर कार्ड से लिंक कर दिया जायेगा।

इसके बाद संबंधित निर्वाचक

पदाधिकारी को उपलब्ध कराया ज